प्रथम स्वतंत्रता संग्राम

डॉ. कन्हैया प्रसाद

इतिहास, पीएचडी

ग्राम + पो0 – माधोपुर, भाया – लौकहा, जिला – मधुबनी, बिहार

भूमिका :

1857 में उत्तरी और मध्य भारत में एक शक्तिशाली जनविद्रोह उठ खड़ा हुआ और उसने ब्रिटिश शासन की जड़ें तक हिलाकर रख दी। इसका आरंभ कम्पनी में तैनात भारतीय सिपाहीयों के विद्रोह से हुआ, जो जल्द ही व्यापक रूप धारण कर लिया। लाखों किसान, दस्तकार तथा सिपाही एक साल से अधिक समय तक बहादुरी से अंग्रेजों के खिलाफ लड़ते रहे और अपनी उल्लेखनीय वीरता और बलिदानों से उन्होंने भारतीय इतिहास में एक नया शानदार अध्याय जोड़ा।

प्रमुख शब्दावली : सिपाही विद्रोह, भारत का इतिहास, स्वतंत्रता संग्राम, राष्ट्रवाद, कारतूस, ब्रिटिश, क्रांतिकारी।

1857 का स्वाधीनता संग्राम भारत के इतिहास का गौरवमयी एवं उज्ज्वल पृष्ठ है जिसमें अपने इस पुरातन राष्ट्र का तेजोमय स्वरूप विश्व के सामने प्रकट हुआ था। यह भारतीय इतिहास का स्वाधीनता हेतु प्रथम राष्ट्रव्यापी संग्राम था, जिसमें सभी जाति, धर्म, सम्प्रदाय व वर्ग के लाखों लोगों ने अपना बलिदान दिया था। विश्व के किसी भी देश में स्वाधीनता के लिए ऐसा बड़ा संघर्ष कभी नहीं हुआ।

अंग्रेजों व वामपंथी इतिहासकारों ने इसे गदर, सैनिक विद्रोह, चर्बीयुक्त कारतूसों के प्रयोग भर बताया है, जिसके कारण भारतीय जन मानस आज तक 1857 के संग्राम के बारे में भ्रमित है। अपनी मातृभूमि पर अवैध कब्जा जमाये विदेशियों के खिलाफ उठ खड़े होना, विद्रोह कैसे हो सकता है, यह तो अपनी मातृभूमि की स्वतंत्रता हेतु सामान्यजन द्वारा योजनापूर्वक किया गया महासंग्राम था।

झांसी की रानी लक्ष्मीबाई, तात्याटोपे के नाम हम सभी ने सुने होंगे, नानासाहब पेशवा, अजीमुल्ला खाँ, रंगोजी बाबू, टाण्टयाभील, वीर कुंवर सिंह के नाम हममें से नगण्य को ही पता होंगे। आज अवसर है अपने इन सभी योद्धाओं को याद करने का कि किस प्रकार से उन्होने इस राष्ट्रव्यापी महासमर की गोपनीयता से योजना बनाई, कैसे लाखों देशभक्त नर–नारियों ने इस राष्ट्र व समाज के लिए अपना सर्वस्व समर्पित कर दिया। साथ ही आज आवश्यकता है 1857 के इस ऐतिहासिक संग्राम के वास्तविक कारणों को सभी के सामने लाकर इतिहासकारों द्वारा जो भ्रम उत्पन्न किया गया है उसे समाप्त करने की, क्योंकि सत्य कभी मिटाये नहीं मिट सकता।

1857 के स्वाधीनता संग्राम के जो कुछ कारण आज तक हमें बताये गये, उसमें पहला कारण था – कि गाय और सुअर की चर्बी का कारतूसों में उपयोग करने के कारण सैनिकों ने विद्रोह किया, अगर ऐसा था तो क्यों नानासाहब पेशवा, झांसी की रानी, रूहेलखण्ड के खान बहादुर खाँ ने इसमें योगदान किया। अगर चर्बीयुक्त कारतूस के कारण ही यह विद्रोह हुआ था तो अंग्रेज जनरल द्वारा इनकी वापसी के आदेश के बाद क्रांति की यह ज्वाला बंद हो जानी चाहिए थी।

दूसरा कारण – अगर अवध के राज्य को अंग्रेजों द्वारा हड़प लेना था – तो क्यों अवध के नवाब के दुर्ग में बंदी होने के बाद उसके कुशासन से तंग होने के बावजूद भी प्रजा व सैनिक अंग्रेजों के विरोध में तलवार म्यान से खींचकर रणभूमि में उतर पड़े। ना ही इस संग्राम का कारण दत्तक पुत्र को राज्य का उत्तराधिकारी नहीं मानना था और ना ही डलहोजी द्वारा लाया गया राजस्व कानून था।

यह संग्राम उत्तर भारत के कुछ हिस्सों में ही नहीं, सम्पूर्ण भारत में लड़ा गया। काबुल, पेशावर, उत्तर प्रदेश, बंगाल, दिल्ली, त्रिपुरा, ढाका, जोराहट, केरल, आन्ध्र, गोवा, पाण्डिचेरी, राजस्थान यानि कि अटक से कटक व कश्मीर से कन्या कुमारी तक यह संग्राम दिखाई देता है। एक ही दिन में 25–25 स्थानों पर तलवारें चलती दिखाई देती हैं। अगर यह उत्तर भारत तक सीमित होता – तो क्यों मुम्बई में 1213 बंगाल में 1997, मद्रास में 1044 सैनिकों के कोर्ट मार्शल उसी समय में किए गये, क्यों अण्डमान की सेल्यूलर जेल में उस समय लाये गये कैदी दक्षिण भारत व पंजाब के थे।[1]

यह संग्राम मात्र उत्तर भारत में सैनिक विद्रोह नहीं था, इसमें तीन लाख से अधिक लोग शहीद हुए, उस समय भारत की आबादी 25–30 करोड़ थी। 1770 से 1947 तक स्वाधीनता के आंदोलन में कुल छह लाख लोग शहीद हुए थे, उसमें से तीन लाख 1857–59 के मध्य 2 वर्षों में हुए। अकेले अवध में 1 लाख 20 हजार लोगों ने अपनी आहुति दी थी – जिसमें एक लाखा सामान्य जनता थी। दिल्ली में 27000, लखनऊ में 20000, इलाहाबाद में 6000 लोगों को सरेआम अंग्रेजों द्वारा कत्ल किया गया। अंग्रेज जो अपने आपको सभ्य समाज मानते हैं, उन्होंने कैसे–कैसे बर्बरतापूर्ण अत्याचार किए, उसकी कहानी उस समय के रचे लोक गीतों में सुनी जा सकती है।[2]

यह भारत में महाभारत के बाद लड़ा गया सबसे बड़ा युद्ध था। जिसमें 3 लाख से अधिक व्यक्तियों, सैनिकों तथा नागरिकों ने अपना बलिदान दिया। भयंकर नर संहार हुआ तथा अपार धनराशि की लूटमार की गई, हजारों गांवों को मिट्टी का ढेर बना दिया गया, अनेक शहर नष्ट हो गये, किले खण्डहर बना दिये गये, सम्पूर्ण देश एक युद्ध क्षेत्र बन गया।

आखिर इस महासमर की मूल प्रेरणा क्या थी जिसके कारण सम्पूर्ण देश में गांव–गांव के अन्दर वनवासी, किसान, मजदूर, सैनिक, राजा सभी जातियों–वर्गों, धर्म व सम्प्रदायों के लोग अंग्रेजों के विरोध में खड़े हो गये और कहा – भगाओ इस फिरंगी को – मारो इस फिरंगी को।

इस संग्राम की मूल प्रेरणा 'स्वधर्म की रक्षा के लिए स्वराज की स्थापना करनी थी।' 1857 के मूल कारण समझने के लिए हमें उससे पूर्व के इतिहास को समझने की आवश्यकता है। भारत में 1206–1857 लगभग 6450 वर्ष मुस्लिम शासकों को शासन काल रहा है। प्लासी के युद्ध 1757 के बाद अंग्रेजों ने ईस्ट इंडिया कम्पनी के नाम पर भारत के राजाओं पर अपना प्रभाव जमाकर कब्जा करना प्रारंभ कर दिया था। 1770 में बंगाल के अन्दर सन्यासियों के आंदोलन ने अंग्रेजों को चुनौती दी। 1757 से 1857 तक यह चुनौती अलग–अलग क्षेत्रों में अंग्रेजों को मिलती रही। 1857 के स्वाधीनता संग्राम के पश्चात् 1858 में ईस्ट इंडिया कम्पनी के 100 पॉण्ड की कीमत का शेयर 10000 पॉण्ड में खरीदकर ब्रिटिश सरकार ने भारत पर अधिकार कर लिया।[3]

1498 में भारत में आने वाला पहला ईसाई वास्कोडिगामा था, जिसका काम समुद्र में लूटमार करना था। पोप ने दुनिया को दो भागों में बांटकर एक हिस्सा लूटने के लिए वास्कोडिगामा को व दूसरा कोलम्बस को दिया था। भारत में आने वाला प्रथम पादरी 1542 में आया, उसका नाम जेवियर था, उसने प्रारंभ में गोवा में अपना कार्य किया और वहीं से भारत में

ईसाईकरण की शुरूआत हुई। ईस्ट इंडिया कम्पनी की स्थापना व्यापार को लेकर की गई थी, इसने प्रारंभ में भारत के धार्मिक व सामाजिक जीवन से अलग रहने का नाटक किया पर यह भी सत्य है कि ब्रिटिश जलयानों से ईसाई पादरियों की सेना भी भारत में आती रही। 1792 में कम्पनी के डायरेक्टर चार्लसग्राण्ट ने अपने ग्रन्थ में लिखा है कि भारत में सदैव उपनिवेश बनाकर रखने के लिए भारत के हिन्दुओं को ईसाई बनाना आवश्यक है। 1793 के चार्टर एक्ट में एक धारा जोड़ने की बात उन्होंने कही, इस चार्टर एक्ट में 20 वर्ष व्यापार करने की अवधि बढ़ाई जाती थी, 1813 के चार्टर एक्ट में धारा 23वीं जोड़कर सरकारी रूप से भारत में ईसाईयत के प्रचार को ब्रिटिश सरकार की सहमति मिल गई। 1813–33 के बीच में मात्र 14600 लोग ईसाई बने जिनमें अधिकांश गरीब, भिखारी, कंगाल व निष्ठाहीन लोग थे। 1934–57 यह ईसाई मत के प्रचार का स्वर्णिम काल था। लॉर्ड मैकाले ने 1836 में अपने पत्र में लिखा था – मेरी शिक्षा प्रणाली लागू होने पर दो या तीन पीढ़ियों के भीतर भारत में कोई मूर्तिपूजक नहीं बचेगा। तभी से सरकारी स्कूलों में बाईबिल पढ़ाना, सरकारी नौकरियों में अंग्रेजी भाषा का ज्ञान तथा ईसाईमत महत्त्वपूर्ण हो गया।[4]

1833 के चार्टर एक्ट के बाद स्थान–स्थान पर भारतीय सैनिक छावनी में ईसाईयत का प्रचार जोश के साथ हुआ। ब्रिटिश सैनिक दोहरे कार्य करते थे। सैनिक शिक्षा व ईसाईयत का प्रचार, मेजर एडविन ने माना कि भारत पर हमारे अधिकार का अन्तिम उद्देश्य देश को ईसाई बनाना है। सेना के अन्दर पादरियों को कर्नल के पदों पर नियुक्त किया गया, बैरकपुर छावनी का प्रमुख कर्नल व्हीटलर भी ईसाईयत का प्रचार करता था व सैनिकों को प्रलोभन देकर धर्म परिवर्तन के लिए प्रोत्साहित करता था। ईस्ट इंडिया कम्पनी के डायरेक्टर आर. डी. मंगल्स ने लार्ड ऑफ हाऊस के अपने भाषण में कहा भारत में ईसाईयत का झंडा फहराना हमारा काम है। एक आंकड़ें के अनुसार 1850 तक ईसाइयों के 260 केन्द्र बन गये थे, जिसमें 360 विदेशी पादरी व 500 भारतीय पादरी थे व लगभग 60000 लोगों को ईसाई बनाया जा चुका था।[5]

धर्म परिवर्तन के साथ ही कम्पनी सरकार द्वारा मन्दिरों व मस्जिदों की जायदाद पर कर लगाना, हिन्दुओं में प्रचलित गोद लेने की प्रथा का लॉर्ड डलहोजी द्वारा विरोध हुआ, जिसमें व्यक्ति अपनी पैतृक सम्पत्ति से वंचित हो जाता था।

परन्तु नये नियम के अनुसार ईसाई धर्म अपनाने पर वह इस सम्पत्ति का स्वामी बना रहता था। 1856 में सेना भर्ती अधिनियम के अन्तर्गत सैनिकों को आवश्यकतानुसार समुद्र पार भेजा जा सकता था। कम्पनी की शिक्षा नीति में भी परिवर्तन किया गया, पाश्चात्य शिक्षा पर आधारित विद्यालय खुलने की बाढ़ आ गई, संस्कृत पढ़ाने वालों का अनुदान बंद कर दिया गया।

अतः कुल मिलाकर 1857 का स्वातंत्र्य समर का आधारभूत कारण सामाजिक, धार्मिक तथा सांस्कृतिक जनाक्रोश की भावनायें थी। यह स्वधर्म की रक्षा के लिए स्वराज की गर्जना थी।

1857 के संघर्ष के विषय में कहा गया कि यह आकस्मिक था, यह अचानक हुआ, कुछ घटनाओं की प्रतिक्रिया थी – क्या यह संघर्ष जिसमें तीन लाख व्यक्तियों का बलिदान हुआ, हजारों व्यक्ति फांसी पर चढ़े, लाखों नागरिकों को गिरफ्तार किया गया, अनेकों को अण्डमान निकोबार की जेल में भेजा गया, देश निर्वासन की सजा दी गई, हजारों सैनिकों के कोर्ट मार्शल हुये, क्या ये किसी आकस्मिक घटना का परिणाम था या एक सोचा–समझा पूर्व नियोजित प्रयास था। जो नियोजित न था वह था मेरठ से सिपाहियों का दिल्ली की ओर प्रस्थान व बहादुर शाह जफर को सम्राट घोषित करना।

इतने बड़े देश में बिना पूर्व योजना के इतना बड़ा संघर्ष नहीं हो सकता। एक और प्रश्न है, इस योजना के सूत्रधार कौन थे? यद्यपि विभिन्न प्रदेशों में इसके योजक तथा सहायक अनेक व्यक्ति थे। तो भी समूचे देश में प्रमुख नायक नानासाहब पेशवा, झांसी की रानी लक्ष्मीबाई, तात्याटोपे, कुंवरसिंह, मौलाना अजीमुल्ला खाँ, मौलवी अहमदुल्ला तथा रंगा बाबू गुप्त थे। वामपंथियों ने इस समस्त योजना के नेतृत्व का मुखोटा बहादुरशाह जफर पर लगाया, परन्तु वह तो खुद इस महासंघर्ष से बेखबर था।

नानासाहब पेशवा, बाजीराव पेशवा के दत्तक पुत्र थे, उन्होंने इस स्वातन्त्र्य की तैयारी 1857 से कर दी थी, उन्होंने विभिन्न रजवाड़ों से सम्पर्क किया, तीर्थयात्रा के बहाने जनसम्पर्क अभियान किया, उन्होंने अजीमुल्ला खाँ के साथ देश की प्रमुख सैनिक छावनियों से सम्पर्क स्थापित किया। इंग्लैंड के बैंक में जमा 5 लाख पॉण्ड की राशि नाना साहब ने इस संग्राम के लिये निकलवाई। झांसी की रानी लक्ष्मीबाई, तात्याटोपे, कुंवरसिंह, मौलवी अहमदुल्ला, अजीमुल्ला खाँ ने भी नानासाहब के साथ अपने प्रदेशों में व्यापक तैयारी आरंभ कर दी थी।

व्यक्तिगत रूप से ग्रामों, कस्बों, नगरों, छावनियों तक पहुंचने के लिए रोटियों व कमल के फूल के माध्यम से स्वाधीनता का संदेश पहुँचाया गया। सम्पूर्ण भारत में यह क्रम तेजी से चला, रोटी और कमल स्वतंत्रता संग्राम के प्रतीक बन गये। यह निश्चित हुआ कि 31 मई को सम्पूर्ण देश में एक साथ क्रांति होगी। 31 मई को रविवार था, सभी ईसाई अधिकारी गिरजाघरों में होंगे, छावनी में अपेक्षाकृत अनुशासन कम होगा, उस समय इंग्लैण्ड अन्य यूरोपीय राष्ट्रों के साथ चीन से लड़ रहा था, अंग्रेज सेना मई प्रथम सप्ताह में चीन के लिए रवाना होने वाली थी। इन सभी कारणों को ध्यान में रखते हुए, 31 मई को कानपुर से पहली तोप दागने का निर्णय हुआ, उसके बाद सम्पूर्ण देश में संग्राम प्रारंभ हो जायेगा, लेकिन इससे पूर्व 29 मार्च को बैरकपुर छावनी में मंगल पाण्डे ने संघर्ष छेड़ दिया, मंगल पाण्डे को गिरफ्तार कर 8 अप्रैल को फांसी दे दी गई। हालांकि नानासाहब का एक पत्र अंग्रेज सरकार के हाथ में पहुँच गया, जिसके कारण गवर्नर जनरल ने चीन की ओर प्रस्थान करने वाली अंग्रेज सेना को फिर से भारत में भेजने की गुहार लगाई व अन्य स्थानों से भी मदद मांगी गई।

दुर्भाग्य से योजना का विस्फोट समय से पूर्व हो गया और 10 मई रविवार को मेरठ की छावनी से यह संग्राम प्रारंभ हो गया। यह बड़े गौरव की बात है कि इतने बड़े देश में योजना में कोई गद्दारी या मुखबरी का अंश नहीं था।

10 मई को मेरठ में स्वतंत्रता का बिगुल बजाने वाले सैनिको ने 11 मई को दिल्ली पर कब्जा कर लिया और बहादुर शाह जफर को भारत का बादशाह घोषित कर दिया। इसी के साथ पंजाब में भी शंखनाद हो गया, समय से पहले विस्फोट हो जाने से योजना गड़बडा गई, अंग्रेज सावधान हो गये, उन्होंने इससे निपटने के उपाय शुरू कर दिए, फिर भी अंग्रेजों को यह कल्पना नहीं हो पाई कि उन्हें पूरब–पश्चिम, उत्तर–दक्षिण अर्थात् पूरे भारत में स्वतंत्रता सेनानियों का मुकाबला करना होगा।

दिल्ली में मेरठ के सैनिकों के आगमन से दिल्ली के नागरिकों तथा बहादुर शाह जफर को आश्चर्य हुआ, दिल्ली का अंग्रेज अधिकारी क्रांतिकारियों से संघर्ष में मारा गया, पं0 जवाहरलाल नेहरू के दादा गंगाधर नेहरू जो दिल्ली में ईस्ट इंडिया कम्पनी में पुलिस अधिकारी थे, उन्हें भी दिल्ली से भागना पड़ा। दिल्ली में भगदड़ मच गई, चार महीनों तक दिल्ली पर स्वतंत्रता सेनानियों का कब्जा रहा?, 20 सितम्बर को अंग्रेजों ने पुनः दिल्ली पर अधिकार कर लिया, इसके बाद दिल्ली में भयंकर कत्लेआम हुआ, दिल्ली एक शमशान नगरी बन गई, दिल्ली में 27 हजार

लोगों को फांसी के फंदे पर लटका दिया गया, महिलाओं के साथ बलात्कार व उन पर अमानवीय अत्याचार किए गये, बहादुर शाह जफर को बन्दी बनाकर लाल किले में उस पर मुकदमा चलाकर, उसे रंगून भेज दिया गया।

दिल्ली के साथ लखनऊ,कानपुर, झांसी, रूहेलखण्ड, बनारस, इलाहाबाद, बरेली, पटना, आरा, जगदीशपुर, फिराजपुर, रावलपिण्डी, झेलम, लुधियाना, स्यालकोट, अम्बाला, गुरूदासपुर, गुड़गांव, पानीपत, नारनौल, फरीदाबाद, दादरी, महू, सागर, ग्वालियर, नसीराबाद, कोटा, टोंक, भरतपुर, नीमच, दक्षिण भारत में हैदराबाद, राजमहेन्द्री, करनूल, गुंटूर, विशाखापट्टनम, मैसूर, कारवाड, शोरापुर, डिंगरोली, मद्रास, मदुरै, कोयंबटूर, सेलम, कालीकट, कोचीन, महाराष्ट्र, पुना, सतारा, अहमदनगर, मुम्बई, नासिक, रत्नागिरी, बीजापुर में भी यह संग्राम चलता रहा, भारत के इन प्रमुख स्थानों से इसकी व्यापकता की जानकारी मिलती है। पुर्तगालियों की बस्ती गोवा में व फ्रांसीसियों के अधीन पाण्डिचेरी में भी इस संग्राम के होने के प्रमाण मिलते हैं।

1857 के स्वाधीनता संग्राम का कारण गाय सुअर की चर्बी के कारतूस, सैनिकों का विद्रोह या नानासाहब, तात्याटोपे, लक्ष्मीबाई जैसे राजाओं की लड़ाई नहीं यह एक पूर्व नियोजित सम्पूर्ण भारत की राष्ट्रीय आकांक्षा का विस्फोट था – वह आकांक्षा थी स्वधर्म की रक्षा के लिए स्वराज की स्थापना करना।

यह 1757 में हुए प्लासी के युद्ध से लेकर 1857 तक यानी पुरे सौ साल के सर्वांगीण शोषण का मामला था, संन्यासी विद्रोह 1763–1800 से लेकर कूका विद्रोह 1861 भारत का कौनसा हिस्सा है जहाँ खून की नदिया नहीं बही? अटक से कटक तक, केरल से कन्याकुमारी तक, काबुल से लेकर पेशावर तक अंग्रेजों के विरूद्ध गांव–गांव में बारूद का ढेर लग गया था। 1857 के इस महासंघर्ष ने भारत में अंग्रेजों की जड़ों को हिला दिया था। ईस्ट इंडिया कम्पनी को बनाये रखने के स्थान पर महारानी विक्टोरिया ने 1858 में बेहतर सरकार के नाम पर ब्रिटिश शासन प्रारंभ कर दिया।

1857 का महासमर विश्व इतिहास की अनूठी घटना थी वह भारत के इतिहास के ब्रिटिश सत्ता के विरूद्ध पहला संगठित प्रयास था। इसके बारे में कहा गया कि यह असफल प्रयास रहा। असफलता के कई कारण यद्यपि बताये जाते हैं, जिनमें सेना शस्त्रों की कमी, यातायात का अभाव, परस्पर तालमेल का अभाव था लेकिन इन सबमें सबसे बड़ा कारण था – योजना का

समय से पूर्व विस्फोट व मेरठ से सेना का दिल्ली आकर बहादुर शाह जफर को बादशाह घोषित करना।

1857 का यह संग्राम उस मात्रा से सफल नहीं हुआ पर अंग्रेज जो इस देश को आस्ट्रेलिया व दक्षिण अफ्रीका की तरह अपना स्थायी निवास बनाना चाहते थे इस विचार को त्याग दिया पर भारत का आर्थिक शोषण मनमाने ढंग से करते रहे, उन्होंने सेना का पुनर्गठन किया, 1857 से पहले भारत में 2,38,000 भारतीय तथा 45,322 अंग्रेज तथा यूरोपीय सैनिक थे। 1857 के पश्चात् यूरोपीय सैनिक 65000 तथा भारतीयो ंकी संख्या घटाकर 1,40,000 कर दी गई। 1857 के बाद अंग्रेज हमेशा विद्रोह की आशंका से भयभीत रहते थे, कोई भी कानून या नीति बनाते समय 1857 की प्रेतात्मा उनके मन मस्तिष्क पर छाई रहती थी।[6]

निष्कर्ष :

1857 का यह संग्राम एक कारण से जरूर सफल हुआ कि इसने पूरे भारत की जनता में एक राष्ट्रव्यापी जागरण का भाव पैदा कर दिया और वे आगे के स्वाधीनता आंदोलन का प्रेरणा देता रहा। इसके बाद कूका आंदोलन, वासुदेव बलवन्त फडके, चाफेकर बन्धु, बिरसा मुण्डा, गोविन्दगुरू, वीर सावरकर, लोकमान्य तिलक, रामप्रसाद बिस्मिल, चन्द्रशेखर आजाद, भगत सिंह, नेताजी सुभाषचन्द्र बोस, महात्मा गांधी 1947 तक स्वाधीनता की यह लड़ाई लड़ते रहे।

संदर्भः

1. जैन, पुखराज, भारत का राष्ट्रीय आंदोलन एवं संवैधानिक विकास, साहित्य भवन, आगरा, 1998
2. वही
3. ग्रोवर, बी. एल. एवं यशपाल, आधुनिक भारत का इतिहास, एक नवीन मूल्यांकन, एस चंद एण्ड कंपनी लि0, नई दिल्ली, 2003
4. काश्यप, सुभाष, भारत का सांविधानिक विकास और स्वाधीनता संघर्षद्व नेशनल पब्लिकेशन, दिल्ली, 1969
5. वही
6. चन्द्रा विपिन : आधुनिक भारत का इतिहास, ओरिएन्ट ब्लैकवार प्रा0 लि0, नई दिल्ली, 2016